हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारिता का योगदान

हिन्दी विभाग

(कला संकाय)

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को प्रस्तावित

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष रंजन

वरिष्ठ प्रवक्ता – हिंदी

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर

जिला –भीलवाड़ा (राज.)

शोधकर्त्री

ज्ञानी कुमारी जाट

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र – 2017–18

Scanned with CamScanner

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

1. Name of Scholar (अंग्रेजी में) : **GYANI KUMARI JAT**

(हिंदी में) : ज्ञानी कुमारी जाट

2. Title of the Research (अंग्रेजी में) : **THE CONTRIBUTION OF WOMEN JOURNALISM IN THE DEVELOPMENT OF HINDI JOURNALISM**

(हिंदी में) : हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारिता का योगदान

Scanned with CamScanner

3. Location : शोध–कार्य स्थल –

A. Department Where the Work is to be done : **Department of Hindi, Government College, Raipur Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer (Raj)**

हिन्दी विभाग,

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय ,

अजमेर

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा) का चयन किया गया है। यहाँ कार्यरत शोध निर्देशक महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। यह महाविद्यालय यू.जी.सी एवं राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत है । यहाँ शोध –कार्य करने संबंधी आधुनिक युग की इंटरनेट की सुविधा है तथा जिले के पुस्तकालय में अध्ययन और शोध सामग्री संकलन की सुविधा भी उपलब्ध है।

Scanned with CamScanner

4. Introduction,Importance of Proposed Investigation,Objective :

परिचय , प्रस्तावित शोध का महत्त्व व उद्देश्य

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास आधुनिक युग के आरंभ के साथ जुडा है। पंडित जुगल किशोर के पत्र *उदत मार्तण्ड* के 30 मई 1826 में प्रकाशन के साथ ही हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत हो जाती है। इसकी परपरा अंतरालों के बीच किसी–न–किसी रूप में जारी रहती है। भारतेंदु युग में प्रकाशित अनेक पत्र–पत्रिकाएँ इसकी गवाही देती हैं। स्वय भारतेंदु ने इसका बीड़ा उठा रखा था। वे हिंदी पत्रकारिता के विस्तार को लेकर हमेशा सजग रहे और नूतन प्रयोग के प्रति सकारात्मकता अपनाते रहे।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने समाज में नयी पहल करते हुए स्त्रियों के लिए भी पत्रिका निकाली। वे *बाला बोधिनी* जैसी स्त्रीवादी पत्रिका के संपादक का दायित्व एक स्त्री की अनुपलब्धता मे स्वय उठाते रहे। तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए महिला समस्याओं पर केंद्रित पत्रकारिता को एक ठोस कदम के रूप में देखा जाना चाहिए। धीरे–धीरे इसका प्रभाव बनारस से आगे भी फैलने लगा । महिलाएँ भी पत्रकारिता से जुडने लगीं । प्रारंभ में स्त्री संबंधित मुद्दे और सरोकार को उठाने वाले अधिकांश पुरुष ही रहे। आगे चलकर महिला की समस्याओं का वर्णन करते हुए हेमंत कुमारी ने 1888 में *सुगृहिणी* नामक पत्रिका निकाली। यह एक अर्थ में यह महिला पत्रकारिता का वास्तविक आरंभ था । इसी कालखण्ड में हर देवी ने *भारत भगिनी* पत्रिका का संपादन कर महिलाओं के वर्चस्व को बनाए रखा। आगे चलकर गांधीवादी विचारधारा का गौरव करती *महिला आश्रम* पत्रिका का प्रकाशन 1945 में प्रारंभ हुआ। इस पत्रिका में कमला बाई और कृष्णा बहन के नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

महिलाओं की सहभागिता को प्रेमचंद ने भी स्वीकारां। प्रेमचंद द्वारा संपादित *हंस* मासिक के कार्य में शिवरानी देवी का परोक्ष रूप से सहयोग था। दिल्ली से प्रकाशित *नवयुग पत्र* मे संपादक श्री इंद्र नारायण गुर्टू को संपादन कार्य मे उनकी पत्नी शचीरानी सहयोग देती थीं। इसी क्रम मे श्रीमती शांति कुमारी ने चौथे दशक में भारतीय प्रेस जम्मू से राष्ट्रभाषा हिंदी के समर्थन मे *भारती* पत्रिका का सपादन किया। महिला पत्रकारिता की दृष्टि से यह बेहद महत्त्वपूर्ण था क्योंकि इस पत्रिका को कश्मीर के जन आदोलन का अग्रदूत भी कहा गया।

इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता और स्त्री एक दूसरे के लिए कभी अनजान नहीं रहे । हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में स्त्रियों की सहभागिता की शुरुआत स्वतत्रता से पूर्व हो चुकी थी। आगे स्वातंत्र्योत्तर भारत में यह सहभागिता और अधिक मुखर होती गई। भारत विभाजन के पूर्व और उसके कुछ समय बाद भी भयंकर सांप्रदायिक दंगे हुए। इस विभाजन की त्रासदी को जनता के सामने लाना पत्रकारों का महत्त्वपूर्ण कर्तव्य बन गया था। यद्यपि पत्रकार के रूप में स्त्रियो का सघन पत्रकारिता मे प्रवेश न हुआ हो लेकिन स्वतंत्रता आदोलन के चलते स्त्रियो मे शिक्षा और जागरूकता की जो हवा चली थी, उसमें हिंदी

Scanned with CamScanner

पत्रकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रतिभागिता दर्ज होती रही। स्वतंत्र भारत की शिक्षित नारी समाज मे महिलाओं के दोयम दर्जे के प्रति तेजी से जागरूकता लाने लगी। सातवें दशक के मध्य में अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष की घोषणा ने तत्कालीन महिला पत्रकारिता में परिवर्तन स्पष्ट रुप से विकसित हुई और महिला पत्रकारिता एक आदोलन बन कर उभरी। स्वाधीन भारत में नारी शिक्षा के व्यापक प्रचार प्रसार ने नारी चेतना को एक आंदोलन बनाने में मुख्य भूमिका अदा की है। आधुनिकीकरण, यंत्रीकरण और तकनीकी विकास के कारण आज की भारतीय नारी की तस्वीर बिल्कुल बदल गई है। आज की स्त्री पुरुष की अनुगामिनी न होकर उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। तेजी से बदलते सामाजिक परिवेश तथा महिला पुरुष समानता के इस दौर में महिलाएँ अब घर की दहलीज लांघ कर बाहर आ चुकी हैं।

भूमंडलीकरण के इस दौर में शहरों की बढती आबादी, नगरीय सभ्यता की बेतहाशा वृद्धि, कन्या–भ्रूण हत्या, बलात्कार जैसे अपराधों के बीच स्त्री की चुनौतियाँ बढती जा रही हैं। आज भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में निरंतर बदलाव आए हैं। यह बदलाव वहाँ आश्चर्यजनक माने जा सकते हैं जिस समाज में पुरुषों का आधिपत्य पहले से चला आ रहा हो। पितृ सत्तात्मक कानून के बीच महिलाओं ने बराबरी या समकक्षता का पाने के लिए अत्यंत संघर्ष किया है। आज आजादी का स्वप्न नारी ने भी देखना शुरु कर दिया है । महिला जागरण की इस नवचेतना के साथ–साथ महिलाओं के प्रति अत्याचार और अपराध के मामले भी बढे हैं। लेकिन महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा दिलाने में महिला पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। महिला पत्रकारिता की सार्थकता महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से जुडी है । महिला पत्रकारिता की आज अलग से जरुरत है, जिसमें महिलाओं से जुडे हर पहलू पर गौर किया जा सके और महिलाओं के सर्वांगीण विकास में यह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

आज हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में आने वाली अनेक गभीर पत्रकार हैं। साहित्य सस्कृति के साथ–साथ महिला मुद्दों पर लिखना उनकी पत्रकारिता का मूल स्वर है। महिलाओं की सुरक्षा का सवाल हो या स्वास्थ्य का, कंडोम की चर्चा हो या बलात्कार का मुद्दा या महिलाओं को डायन समझ कर जलाना – सभी संदर्भ को बड़ी सहजता से उठाने मे सभी पारगत है। पत्रकारिता के प्रति समर्पित ऐसी पत्रकारों में नूतन मिश्र, सुधा शुक्ला, नीलम महाजन, शिखा श्रीवास्तव, मृणाल पांडे, ममता कालिया, नमिता सिंह, रमणिका गुप्ता, डॉक्टर सुधा ओम ढींगरा, नंदिता, अर्चना सिंह, इंदू रस्तोगी, सुप्रिया योगी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कुछ वरिष्ठ महिला पत्रकार भी हैं, जो स्वतंत्र रुप से विभिन्न समाचार पत्रो के लिए संपादकीय लिख रही हैं। इससे पत्रकारिता में एक सुखद संयम दिखलाई पडने लगा है।

पत्रकारिता का उद्देश्य सच्ची घटनाओं पर प्रकाश डालना है व वास्तविकताओं को सामने लाना है। एक पत्रकार से यही आशा की जाती है कि वह इस तरह काम करे कि बहुजन हिताय की

Scanned with CamScanner

भावना सिद्ध हो। पत्रकारिता का कार्य अत्यंत सवेदनशील है। इसमें विभिन्न प्रकार के जोखिम या चुनौतियाँ हैं। फिर भी महिलाओं ने पुरुष पत्रकारों की भाँति रिपोर्टिंग को अपना व्यवसाय बना लिया है। महिलाएँ पत्रकारिता के क्षेत्र में घर कर चुकी हैं, जहाँ कभी पुरुषों का आधिपत्य था। वर्तमान दौर में महिला पत्रकारों की स्थिति उनकी समस्याओं और समाज मे उनके अस्तित्व आयामों पर विचार करना आवश्यक हो गया है। मुट्ठी भर पढ़ी–लिखी अभिजात्य वर्ग की महिलाओं का हिंदी पत्रकारिता में आगमन का उद्देश्य भले ही कुछ भी रहो लेकिन उससे पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके हस्ताक्षरों को धूमिल नहीं किया जा सकता। हमारे देश में नारी मुक्ति के आंदोलन का इतिहास रहा है और तत्कालीन हिंदी पत्रकारिता उसकी साक्षी बनी है।

इस शोध के माध्यम से यह पता चल पाएगा कि आधुनिक महिला पत्रकारों की समस्या कितनी विविध तथा अलग प्रकार की हैं तथा किस प्रकार वे समाज के अनछुए पहलू को उजागर कर अपना स्थान बना रही हैं। समाज का पूँजीपति वर्ग तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में स्वयभू बने कुछ संपादक महिला पत्रकारों को आत्मनिर्भर बनने देना नहीं चाहते हैं। उनके आत्मसम्मान को कुचलने की कोशिश करते हैं। आज का बाजारवाद स्त्री की छवि को बाजार की शिकंजे में कैद करना चाहता है। वह महिला पत्रकारों को स्क्रीन पर दिखा पत्रकारिता के विज्ञापन का बाजार रचता है। फिर भी महिला पत्रकारो ने इस चुनौती को स्वीकारते हुए देह की आजादी के साथ–साथ मन और चेतना की स्वतंत्र को बचाने की कोशिश की है ।

आज की महिला पत्रकारिता स्वैच्छिक सगठनों की पहचान करने और महिलाओ की समस्याओं को सूचीबद्ध करने पर बल दे रही है। महिलाएँ सशक्त ढंग से समाज के लिए अपनी कलम चलाते हुए महिलाओं के प्रति सकारात्मक सोच का निर्माण में व्यस्त हो रही हैं। यह शोध–कार्य एक अर्थ में हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में महिला पत्रकारिता के बहुआयामी विस्तार को देखने की कोशिश है।

इस शोध–कार्य के उद्देश्यों को निम्नलिखित रूपों में सकेतित किया जा सकता है –

1. महिला पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालना।
2. महिला पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में स्त्री–विमर्श की परख करना।
3. समय के बदलते परिप्रेक्ष्य में महिला पत्रकारों की विचारधारा में बदलाव की विवेचना करना।
4. महिला पत्रकारिता में मानवीय मूल्यों के क्षरण एवं संवेदनाओ की परख करना।
5. हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों के सामने उपस्थित चुनौतियों का अध्ययन।
6. हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारिता को समझना।

Scanned with CamScanner

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study :

अध्ययन विषय पर पूर्व में किये गये शोधकार्य का पुनरावलोकन –

ज्ञान की परंपरा अतीत सीख से नवीन की ओर प्रस्थान करती है। शोध परियोजना की दिशा में इस तथ्य का विशेष ध्यान रखा जाता है। शोध की प्रगति में विगत शोध–कार्य वैचारिक पोषण का कार्य करते हैं। अतः इस संदर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

पूर्व में इस विषय को केंद्र में रखते हुए शोध–ग्रंथ बहुत ही कम उपलब्ध हैं क्योंकि शोध विषय श्रमसाध्य और नवीन है। इनमें से प्रमुख शोध–ग्रंथ पंडित बालकृष्ण भट्ट, डॉक्टर दिनेश कुमार और विष्णु पंकज के द्वारा रचित हैं। पंडित बालकृष्ण भट्ट ने *हिंदी की दशा और पत्रकारिता* नाम से किताब में हिंदी भाषा और पत्रकारिता की व्याख्या की है। डॉक्टर दिनेश कुमार ने *भारत में हिंदी समाचार पत्रों की राजनीतिक एवं सामाजिक भूमिका एक ऐतिहासिक अध्ययन* किताब में समाचार पत्रों की राजनीति व समाज में भूमिका का वर्णन किया है। विष्णु पंकज ने *हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा* में पत्रकारिता के प्रारंभिक दौर का वर्णन किया है।

मुख्यतः ये शोध–ग्रंथ सूचनात्मक हैं। इन ग्रंथों में हिंदी पत्रकारिता के विकास यात्रा की चर्चा तो की गयी है लेकिन इस विकास में महिला पत्रकारों के योगदान को सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारों के योगदान को देखना ही विवेच्य शोध से अपेक्षित है जो अब तक उपेक्षित रहा है।

Scanned with CamScanner

6. Research Gap identified in the proposed Field of Investigation :

प्रस्तावित शोध कार्य व पूर्व में किये गये शोधकार्य के अन्तराल का आंकलन –

प्रस्तावित शोध विषय पर किसी भी शोधार्थी ने महिला पत्रकारों या महिला पत्रकारिता पर एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। हिंदी पत्रकारिता के विकास से संबंधित कुछ पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें महिला पत्रकारों के बारे में कहीं–कहीं सूचना दी गई है। कुल मिलाकर महिला पत्रकारिता पर कोई शोध–ग्रंथ नहीं लिख गया है।

आजकल महिला पत्रकारिता निरंतर अपना विस्तार कर रही है। निरंतर सृजन कर्म में रत महिला पत्रकारों पर दृष्टिपात अभी किसी शोध ग्रंथ में उपलब्ध नहीं है। अतः विवेच्य शोध में हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारों के विविध योगदान और आयामों को प्रस्तुत किया जाएगा जो अब तक अछूते रहे हैं। इसलिए प्रस्तावित शोध शोध–अंतराल को पाटने का कार्य करेगा ।

Scanned with CamScanner

7. Major Hypothesis (If any) : मुख्य परिकल्पना –

हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों के योगदान पर शोध की आवश्यकता व्यापक रूप से सदैव परिलक्षित होती रही है। इसलिए इस अध्ययन से हिंदी महिला पत्रकारिता में आए परिवर्तन की परंपरा को परिलक्षित करने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तुत शोध–प्रबंध में हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला से संबंधित पत्रकारिता और महिला पत्रकारों के द्वारा की जा रही पत्रकारिता के योगदान को लक्ष्य किया जाएगा।

स्वतंत्रता के बाद स्थितियाँ बहुत बदली हैं और आज पत्रकारिता भी लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में अपनी भूमिका के निर्वहण पर प्रश्न चिह्न पैदा कर रहा है। ऐसे समय में महिला पत्रकारिता की चुनौतियों की पहचान करना आवश्यक है । इस दौर में महिला पत्रकारिता के महत्त्व को देखना एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनका विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा। भूमंडलीकरण के दौर में महिला पत्रकारिता के बढ़ते स्वरूप की परख की कोशिश जायेगी।

Scanned with CamScanner

8. Research Methodology : शोध–पद्धति –

प्रस्तावित शोध–कार्य में एम.एल.ए.हैंड बुक की सहायता ली जायेगी। जोसफ गिबाल्डी द्वारा रचित इस पुस्तक की इंडेक्स पद्धति से शोध–कार्य को गति प्रदान करना उचित प्रतीत होता है। इस पद्धति में अधिक से अधिक संदर्भ ग्रंथों का संकलन किया जाता है।

आंकड़ों का स्रोत –

प्राथमिक स्रोत – वर्तमान में कार्यरत प्रमुख महिला पत्रकारों का साक्षात्कार लेकर अपने शोध विषय के लिए नवीन सामग्री संगृहीत की जायेगी। इसके साथ महिला पत्रकारों द्वारा संपादित पत्रिकाओं और कार्यक्रमों को आधार सामग्री के रूप में उपयोग किया जायेगा। जो पत्रकार कवयित्री या लेखिका हैं उनकी रचनावलियों को आधार ग्रंथ के रूप में उपयोग किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोत – इसके अंतर्गत हिंदी पत्रकारिता के विकास से से संबंधित शोध–ग्रंथ, पत्र, आलेख आदि को सम्मिलित किया जायेगा। पत्रकारिता के सिद्धांत से संबंधित पुस्तकें और महिला पत्रकारिता पर केंद्रित पुस्तकों को भी महत्त्व दिया जायेगा। वरिष्ठ पत्रकारों के लेखों के अतिरिक्त उनके साक्षात्कारों को भी गंभीरता के साथ अध्ययन किया जायेगा।

इस संदर्भ में हिंदी पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

9. List of Reference cited : संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 2006
2. इंद्रनाथ मदान : आधुनिकता और हिंदी साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
3. एच एल व्यास : समकालीन भारतीय समाज में उभरते सामाजिक मुद्दे एवं समस्याएं, साहित्यकार, जयपुर, 2017
4. एम एन श्रीनिवास : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1994
5. एम एन श्रीनिवास : आधुनिक भारत में जातिवाद तथा अन्य निबंध, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ल 1994
6. एन सी पंत : हिंदी पत्रकारिता का विकास, राधा पब्लिक एंड संस, नई दिल्ली, 1994
7. ओंकार शरद : भारत के शासक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1999
8. कमलेश्वर : नई कहानी की भूमिका, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1978
9. कृष्णदत्त पालीवाल : उत्तर आधुनिकता की ओर, आर्य प्रकाशन, नई दिल्ली 2016
10. कृष्ण बिहारी मिश्र : हिंदी पत्रकारिता जातीय अस्मिता की जागरण भूमिक, लोक भारती प्रकाशन, ठलाहाबाद, 1994
11. गणपति चंद्र गुप्त : हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004
12. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी : हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
13. दिनेश कुमार : ब्रिटिश भारत में हिंदी समाचार पत्रों की राजनीतिक एवं सामाजिक भूमिका एक ऐतिहासिक अध्ययन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
14. देवीशंकर अवस्थी : नई कहानी संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1993
15. नगेंद्र : भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2009
16. नगेंद्र : हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर, नोएडा
17. नामवर सिंह : कहानी नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1992
18. नित्यानंद तिवारी : आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
19. बच्चन सिंह : आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
20. बी एल माली अशांत : राजस्थानी शब्दकोश, राजस्थानी भवन फाउंडेशन, जयपुर, 2014
21. मस्तराम कपूर साहित्यकार का संकट, लेखक मंच, दिल्ली, 1992
22. मृणाल चटर्जी : हिंदी पत्रकारिता का इतिहास, प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, 2014
23. राजकिशोर : समकालीन पत्रकारिता मूल्यांकन और मुद्दे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

Scanned with CamScanner

24. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : आज का स्त्री आंदोलन , शब्दसंधान, दिल्ली, 2011

25. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : स्त्री सशक्तीकरण की राजनीति , शब्दसंधान, दिल्ली, 2012

26. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : विवाह की संस्था में बदलाव की जरूरत , शब्दसंधान, दिल्ली, 2013

27. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : आज के समय में प्रेम , शब्दसंधान, दिल्ली, 2008

28. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : मीडिया और जनतंत्र , शब्दसंधान, दिल्ली, 2012

29. रमेश उपाध्याय–संज्ञा : बाजारवाद और नयी सृजनशीलता , शब्दसंधान, दिल्ली, 2010

30. रामशरण गौड़ : पौराणिक आख्यान कोश ,विभूति प्रकाशन, दिल्ली

31. रामविलास शर्मा : महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

32. रामविलास शर्मा : भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989

33. रामस्वरूप चतुर्वेदी : हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015

34. विजयदेव नारायण साही : लोकतंत्र की कसौटियाँ, हिंदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1991

35. विश्वनाथ त्रिपाठी : हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नईदिल्ली, 2010

36. वेदप्रताप वैदिक : हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम, नई दिल्ली, 1997

37. श्यामाचरण दुबे : परंपरा इतिहास बौद्ध संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

38. श्यामाचरण दुबेः मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

39. श्यामाचरण दुबे : समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996

40. श्यामाचरण दुबे : भारतीय ग्राम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

41. श्याम सिंह शशि : साहित्य और समाज, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2015

42. सुधा शुक्ला : महिला पत्रकारिता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली,2012

43. सुमन राजे : हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली

44. सुषमा यादव : भारतीय राजनीति के ज्वलंत प्रश्न ,हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1994

45. हजारी प्रसाद द्विवेदी : भाषा साहित्य और देश, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

समाचार पत्र –

- साप्ताहिक हिंदुस्तान (अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष विशेषांक) 1975
- जनसत्ता – नई दिल्ली
- मधुरिमा (दैनिक भास्कर) – जयपुर
- राजस्थान पत्रिका – जयपुर

पत्रिकाएँ –

Scanned with CamScanner

- हंस – नई दिल्ली
- नया ज्ञानोदय – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली
- अक्षर – जयपुर
- शोध वैचारिकी – मुजफ्फरनगर
- द संडे इंडियन – नोएडा
- वागर्थ – कोलकाता
- साहित्य अमृत – नई दिल्ली
- मनोरमा – इलाहाबाद
- आजकल – नई दिल्ली
- वामा – नई दिल्ली
- मांनुषी – नई दिल्ली

समाचार पत्र –

- दैनिक भास्कर, जयपुर
- राजस्थान पत्रिका, जयपुर
- जनसत्ता, नई दिल्ली
- हिंदुस्तान, नई दिल्ली
- राष्ट्रीय सहारा, नई दिल्ली
- नवभारत टाईम्स, नई दिल्ली

(समस्त प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा इंटरनेट पर उपलब्ध शोध–विषय सहायक सामग्री)

ज्ञानी जाट
हस्ताक्षर

दिनांक –8/11/2017

शोधकर्त्री – ज्ञानी कुमारी जाट

OUTLINE APPROVED

8/11/17

हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
शोध पर्यवेक्षक – डॉ. मनीष रंजन
व्याख्याता – हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय रायपुर, भीलवाड़ा

विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
राजकीय महाविद्यालय रायपुर (भीलवाड़ा)

Scanned with CamScanner